# AALOCHNA SIDDHANT AUR SHASTRA

# SM-1

## 14 संरचनावाद-और उत्तर-संरचनावाद

**संरचनावाद-और उत्तर-संरचनावाद**

-डा. मीनाक्षी व्यास

संरचनावाद का प्रारंभ भाषाशास्त्राी सस्यूर वे+ संरचनात्मक भाषाविज्ञान से माना जाता है। बाद में भाषाविज्ञान वे+ प्राग, कोपेनहेगन आदि स्वू+ल या- संप्रदायों ने भी इसे विकसित किया।

**-'आèाुनिक-भाषाविज्ञान (डा. भोलानाथ)**

संरचनावाद (ेजतनबजनतपेउ) इस तथ्य पर वें+द्रित है कि मनुष्य वे+ विचार व अनुभव और भाषा व्यवहार-विभिन्न संरचनाओं पर आèाारित होते हैं। संरचनावाद सन 1950-60 वे+ आसपास बौद्धिक-विचारèाारा वे+ रूप में उभरा। यह सांस्Ñतिक-संदभो± (जैसे-साहित्य) की आèाारतभूत संरचनाओं और संरचनात्मक भाषाविज्ञान पर आèाारित है।

संरचनावाद संस्Ñति-विशेष के संदर्भ में भाषा प्रयोग वे+ प्रकार और उसकी संरचनात्मक व्यवस्था पर अèिाक बल देता है। इसवे+ अलावा यह विविèा सामाजिक क्षेत्राों व संदभो± में प्रोकित (कपेबवनतेम) वे+ रूप में भाषा प्रयोग पर भी èयान देता है। अलग-अलग भाषिक संरचनाओं का उनकी सांस्Ñतिक, सामाजिक संरचनाओं से संबंèा होता है। किसी साहितियक Ñति वे+ अर्थपूर्ण पाठ वे+ लिए लेखक, पाठक और Ñति की सांस्Ñतिक संरचना का समान होना महत्त्वपूर्ण है। यह समानता अर्थ ग्रहण, अर्थ संप्रेषक और अर्थ व्यंजकता की संभावना को बढ़ाती है। क्योंकि विभिन्न प्रोकितयों (कपेबवनतेमे) वे+ संरचनात्मक संसार में साहित्य भी अपने आप में एक प्रोकित (कपेबवनतेम) है और हर कपेबवनतेम में अर्थ निèर्ाारण, भाषा वे+ विशिष्ट प्रयोग, लयात्मकता, विषय क्षेत्रा आदि वे+ संदर्भ में अपनी अलग संरचनाएं होती हैं। अत: लेखक, पाठ या Ñति और पाठक-तीनों की ज्ञानात्मक सरंचना की सहभागिता उन तीनों की संस्Ñति विशेष की सहभागिता से जुड़ जाती है। समान स्तर का सांस्Ñतिक कोड समाजिक (यथार्थ) कोड वे+ अर्थ को समझने में मदद करता है।

सरंचनावाद साहितियक Ñति में शैली (हमदतम) को भी महत्त्वपूर्ण मानता है। जैसे-उसमें निहित-विषय वे+ निèर्ाारण 'विषय वे+ पाठ गंभीरता वे+ स्तर, भाषा प्रयोग विèााओं आदि की संरचनात्मक शैली। सिथतियों, बाá-व्यवहारों तथा उनमें निहित नैतिक और कलात्मक मूल्यों की विभिन्न अपेक्षाओं की पूर्ति विभिन्न प्रकार की संरचनात्मक शैलियों में संभव है।

साहित्य अपनी प्रÑति में एक प्रकार का संस्थानगत या समूहगत अनुबंèान है, अत: उसके उस समूह की प्रवृतितयों वे+ अनुरूप साहित्य की सृजनात्मक संरचना और उसवे+ पठन-पाठन वे+ अपने संरचनात्मक नियम होते हैं। साहित्य वे+ रूप में 'भाषा व्यवहार व्यकितजन्य प्रयोग होने वे+ कारण नवप्रवर्तनकारी भी होता है। इस रूप में वह 'भाषा-व्यवहार (सस्यूर) का वह रूप है जो किसी सांस्Ñतिक 'भाषा व्यवस्था की वैयकितक अभिव्यकित होता है। इस प्रकार साहित्य अपने आप में नितांत आèाारहीन या निरा स्वायत्त नहीं है। वह किसी खास सांस्Ñतिक व्यवस्था की पहचान को निèर्ाारित करने वाली संरचनाओं का एक हिस्सा या अंश भी है।

संरचनावाद साहितियक-Ñति वे+ पाठ को दृढ़ आèाार देता है। उसमें व्यक्त अनुभव और विचार किसी-विशेष संरचना पर आèाारित होते हैं। संरचना विशेष में बंèाकर अनुभव, अवèाारणाएं और भाषा-प्रयोग संभव होते हैं।

x
Please Ask
( कृपया पूछें )

भाषा-विज्ञान (स्पदहनपेजपबे) वे+ संदर्भ में संरचनावाद-

भाषा अèययन में संरचनावाद आèाुनिक भाषा-विज्ञान वे+ जनक सस्यूर द्वारा प्रस्तावित माना जाता है।। उन्होंने भाषा की जिस संरचना का वर्णन किया है, वह एक ओर सामाजिक वस्तु है और दूसरी ओर अपनी प्रÑति मे वह सतत परिवर्तनशील है। सामाजिक होने वे+ कारण उसका एक पक्ष संस्थागत है जिसे सस्यूर ने 'भाषा व्यवस्था (सं संदहनम) वे+ द्वारा स्पष्ट किया। सतत परिवर्तनशील होने वे+ कारण भाषा का एक दूसरा पक्ष भी है, जिसे उन्होंने 'भाषा व्यवहार की अपनी संकल्पना द्वारा परिभाषित करना चाहा। उनकी èाारणा वे+ अनुसार 'भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार मिलकर ही भाषा की सही संरचना का निरूपण करते हैं। डा. रवीन्द्रनाथ ने सस्यूर वे+ सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए कहा है- भाषा शाबिदक प्रतीकों की संरचनात्मक आन्वेति है। शाबिदक प्रतीक होने वे+ कारण उसवे+ संवे+तार्थ (वाच्य) (ेपहदपिमक) और अभिव्यकित (वाचक) (ेपहदपपिमत) पक्षों वे+ बीच में एक अभिन्न संबंèा मिलता है। पर भाषा मात्रा शब्दों का समूह नहीं होता। अगर ऐसा होता तो भाषा और उसवे+ समूह (शब्दकोष) एक ही माने जाते। पर यह सभी को मालूम है कि शब्दकोश भाषा का वे+वल एक अंग है, उसका पर्याय नहीं। किसी भाषा वे+ वाक्य निर्माण वे+ समय हम शब्दों को एक कड़ी वे+ रूप में पिरोते हैं। पर शब्दांें की हर कड़ी वाक्य का दर्जा नहीं पाती। इसवे+ साथ यह भी तथ्य èयान देने योग्य है कि वाक्य में 'शब्द, 'अनुशासित रूप में प्रयुक्त होते हैं। शब्द तो एक ही रहता है यथा- लड़का, पर जब वह वाक्य में प्रयुक्त होता है तो अनुशासित होकर विभिन्न रूपों में व्यक्त होता है यथा- लड़का, लड़वे+, लड़कों आदि । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भाषा में जब शाबिदक प्रतीक व्यवâत होते हैं तब उनवे+ पीछे भाषा का एक निशिचत विèाान काम करता है। यह विèाान या संरचना ठीक उसी प्रकार काम करता है जैसे शतरंज वे+ खेल का नियम। शतरंज वे+ खेल वे+ नियम वे+ सादृश्य पर भाषा की प्रÑति को समझना संभव है। इस संबंèा में निम्नलिखित तथ्य èयान देने योग्य हैं-

1. जिस प्रकार शतरंज वे+ खेल वे+ नियम पूर्वनिèाारित होते हैं, जिसवे+ आèाार पर उसवे+ खेलने वाले अपनी चाल चलते हैं उसी प्रकार भाषा वे+ नियम पूर्वनिèाारित होते हैं और उन्हीं नियमों वे+ आèाार पर उसवे+ प्रयोक्ता उसका व्यवहार करते हैं।

2. जिस प्रकार शतरंज वे+ खेल में प्रयुक्त होने वाली इकाइयां-प्यादा, आदि एक निशिचत मूल्य को व्यक्त करती हैं उसी प्रकार भाषिक इकाइयां भी अपनी मूल प्रÑति में मूल्य-परक होती हैं और जिस प्रकार शतरंज वे+ खेल की संरचनात्मक व्यवस्था इकाइयों वे+ मूल्य को निèाारित करती है, यथा-प्यादा एक घर सीèाो चलता है और तिरछे मारता है, आदि, उसी प्रकार भाषा की सरंचनात्मक व्यवस्था उसकी इकाइयों वे+ मूल्य को निèाारित करती है, 'लड़का दौड़ रहा है,-वाक्य में 'लड़का- संज्ञा, 'दौड़-क्रिया, आदि।

3. जिस प्रकार शतरंज की इकाइयां मूल्य-परक होने वे+ कारण मूल-प्रÑति में 'रूप (थ्वतउ) होती है और अपने उपादान से नियंत्रित नहीं रहतीं। उसी प्रकार भाषा की सभी इकाइयाँ अपनी मूल-प्रÑति में रूपात्मक होती हैं। उदाहरण वे+ लिए शतरंज की इकाई, यथा उसका प्यादा संगमरमर का बना है अथवा लकड़ी या प्लासिटक का, यह खेल वे+ लिए महत्त्वपूर्ण नहीं होता, यहाँ तक कि अगर कोई गोट खोई भी जाए तब उसवे+ बदले में कोई दूसरी चीज रखकर खेल आगे बढ़ाया जा सकता है, शर्त यह है कि उस 'चीज को उस गोट का मूल्य दे दिया जाए। भाषा में अभिव्यकित माèयम वे+ लिए हम èवनियों या लेखन को अपनाते हैं पर चाहे èवनियों का सहारा लेकर हम शब्द का उच्चारण करें अथवा लेखन का सहारा लेकर उसे लिखकर व्यक्त करें, उसका भाषिक मूल्य समान होता है।

सामान्य भाषा में अभिèााशकित वे+ कारण शब्द-प्रयोग विषय वे+ अनुसार निèाारित अर्थ देते हैं जबकि साहितियक भाषा वे+ शब्दों में लक्षणा-व्यंजना जैसी शब्दशकितयों, प्रतीकों और बिंबों का सर्जनात्मक प्रयोग मिलता है। साहित्य में शैली शिल्प, रूपक, वक्रता, विचलन, मानवीकरण, लयात्मक प्रत्यय, समानांतरता आदि वण्र्य-वस्तु का उत्कर्ष करने वाली शैलीगत संरचनाएं हैं । जो मुख्यार्थ वे+ साथ विशिष्ट अथो± का निर्माण करवे+ भाषा को अर्थ विस्तार और प्रभावात्मकता देती हैं। साहितियक रचना यदि गध वे+ रूप में है तो उसकी भाषा में शब्दों वे+ विशिष्ट प्रयोग वे+ साथ-साथ वाक्य रचना भी महत्त्वपूर्ण है। वाक्य में भावों और विचारों की श्रृंखला चलती है। अत: छोटे वाक्य भाषा वे+ प्रभाव और सौंदर्य में वृद्धि करते हैं। साथ ही वाक्य रचना में स्पष्टता, अर्थबोèाकता, प्रवाह, सजीवता और अंत:स्पू+र्ति अपेक्षित है। गध में कथागत अर्थ, चरित्राों की पहचान, परिवेश, विवरण, संवाद-योजना आदि भाषा की सर्जनात्मक संरचना वे+ अनिवार्य और सहभागी घटक हैं।

x
Please Ask
( कृपया पूछें )

प्रयोजन को विवेèाता हो भाषा को विभिन्न सन्दभा±ं में देखने वे+ लिए बाèय करती है। विद्वानों का एक वर्ग इसे मनुष्य मन की सर्जनात्मक शकित वे+ रूप में देखता है तो दूसरा वर्ग इसे मनुष्य व्यवहार की सामाजिक शकित वे+ रूप में।

अपनी प्रकति में भाषा प्रतीकों की संरचनात्मक व्यवस्था है। इस रूप में भाषा को परिभाषित करते समय दो प्रश्न उठाए जा सकते हैं- (1) प्रतीक या भाषिक प्रतीक की प्रÑति क्या है? और (2) इन प्रतीकों की व्यवस्था से हमारा क्या तात्पर्य है? इन दो प्रश्नों वे+ समुचित उत्तर पाने वे+ बाद ही इस वे+ सही अर्थ को समझा जा सकता हैं।

प्रतीक वह वस्तु है जो किसी (व्याख्याता) वे+ लिए किसी अन्य वस्तु वे+ स्थान पर प्रयुä होती है। विद्वान पीयर्स (ब्ण्ै च्पमतबम) वे+ शब्दों में यह कहा जा सकता है - ।ेपहद पेवउमजीपदह जींजेजंदके जवेवउम इवकल वितेवउमजीपदह मसेम पदेवउम तमेचमबज वत बंचंबपजलण् उदाहरण वे+ लिए हम कह सकते हैं कि मूर्ति भगवान का प्रतीक है क्योंकि व्याख्याता (भäों) वे+ लिए मूर्ति वह वस्तु है जो अन्य वस्तु (भगवान) वे+ लिए प्रयुक्त होती है। इसी प्रकार जब हम 'मेज शब्द का विचार करते हैं( तब उसको भी प्रतीकवत प्रयुä पाते हैं। उच्चरित या लिखित रूप में शब्द स्वयं वस्तु नहीं होता। वह तो 'मेज वस्तु वे+ लिए प्रयुä प्रतीकजन्य वह भाषिक वस्तु है जिसे उसवे+ प्रयागकर्ता (व्याख्याता) वास्तविक वस्तु के स्थान पर व्यवहार में लाते हैं।

वस्तुत: प्रतीक की अवèाारणा संवे+तन संबंèाों पर आèाारित है। ये संबंèा इन इकाइयों वे+ आèाार पर बनते हैं। इन इकाइयों को क्रमश: 'संवे+तित वस्तु 'संवे+तार्थ और 'संवे+त प्रतीक कहा जाता है। संवे+तित वस्तु बाá जगत में सिथत इकाई है- यथा - किताब आदि। 'संवे+तार्थ, व्याख्याता या प्रयोगकर्ता वे+ मन में सिथत उस इकाई की संकल्पना है। प्रतीक इस संवे+तार्थ को अभिव्यकित देने वाली इकाई है जो संवे+तित वस्तु वे+ स्थान पर वु+छ विशेष संदभो± में प्रयुक्त होती है।

संवे+तित वस्तु और प्रतीक वे+ संबंèा सहज नहीं है। साथ ही, संवे+तार्थ वे+ निर्माण में वे+वल बाह्य जगत की वस्तुएँ ही योग नहीं देती, अपितु व्याख्याता या प्रयोगकर्ता का जातीय इतिहास, उसकी सभ्यता और संस्Ñति भी अपना योग देती है। इसीलिए भाषिक प्रतीक वे+ रूप में प्रयुक्त शब्दों का सामाजिक एवं सांस्Ñतिक अर्थ भी हुआ करता है। उदाहरण वे+ लिए-वैष्णव, आर्य, उषस, यज्ञ आदि शब्द-भाषिक प्रतीक वे+ संवे+तार्थ वे+ रूप में सांस्Ñतिक अर्थ को भी व्यंजित करते हैं।

इस प्रकार की भाषा संरचनाओं का सुरिक्षत और अर्थव्यंजक रूप साहित्य मे मिलता है। भाषा और साहित्य इतने संब) हैं कि भाषिक-प्रतीक वे+ रूप में प्रयुक्त शब्द संरचनाएं साहितियक संरचनाओं से असंब) नहीं हो सकती। किसी साहितियक Ñति या काव्य में निहित काव्यवस्तु, रूपबंèा, भाषा और बिंब जिस सांस्Ñतिक-व्यवस्था की संरचनाओं का हिस्सा या अंश होते हैं उन्हीं वे+ संदर्भ में उनका अर्थ पूर्ण रूप में समझा जा सकता है। उदाहरण वे+ लिए- आèाुनिक हिंदी-साहित्य में श्री नरेश मेहता जी वे+ काव्य को लिया जा सकता है। उनके काव्य में निहित भाषिक-प्रतीक वे+ रूप में प्रयुक्त शब्दों का सामाजिक-सांस्Ñतिक अर्थ-सांस्Ñतिक बोèा वे+ साथ ही नए जीवन-संदभो± में समझा जा सकता है-

"इनर्थ काव्य की पंरपरा को अèाुनातन स्वर देने वाले अक्षरजीवी कवि श्री नरेश मेहता ने काव्य को शब्द-यज्ञ कहकर स्वन को नि:स्वन और स्वर को 'भास्वर बना दिया है। यत से तत को जोड़ दिया है, सत में असत को समेट लिया है, सत को उत्सव बना दिया है और अक्षर को आख्यानक परिèाान पहनाया है। वे+वल काव्य-जिज्ञासा ही नहीं, बलिक संसार की समस्त सर्वसत्तात्मक जिज्ञासा यत से आरंभ होती है और तत में तल्लीन।....यही औपनिषदिक जिज्ञासा कवि श्री नरेश मेहता की काव्य-जिज्ञासा है।

-(श्री पाण्डुरंग : 'चैत्या, पृ.1)

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित होने वे+ श्रीअवसर पर, भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रसारित काव्यसंकलन 'चैत्या में 'तन्मात्रा वे+ रूप में कविपरिचय में निदेशक श्री पाण्डुरंग ने चैत्य-पुरुष श्री नरेश मेहता को 'आर्ष काव्य की परंपरा को अèाुनातन स्वर देने वाले 'अक्षर जीवी कवि वे+ रूप में सटीक संबोèाान दिया है। इसी औपनिषदिक जिज्ञासा का समाèाान करते हुए कवि ने अपने समस्त काव्य में अपनी काव्यवस्तु, रूपबंèा, भाषा व बिंबों को चैत्या बना दिया है। मेहता जी वे+ काव्य में निहित सांस्Ñतिक तात्पर्य, वैदिक और औपनिषदिक संदर्भ उनवे+ काव्य-संसार को एक पृथक पहचान देते हैं। उन्होंने 'दूसरा सप्तक में संकलित अपनी कविताओं वे+ 'वक्तव्य में लिखा है-

x
Please Ask
( कृपया पूछें )

'संस्Ñांते भ्रामक शब्द है।र् फिर भी संस्Ñांते की शोèा तो की जा सकती है और हम मनुष्य वे+ आदिकाल वे+ काव्य से भावों की विराटता ग्रहण करवे+ सुन्दर वैशिष्टयप्रèाान साहित्य रच सकते हैं। इस प्रकार वे+ प्रयोगों में उदाहरण रूप में मेरी 'उषस है।..... 'मेघ में तथा 'समय देवता, जैसी लंबी कविताएँ हैं। जिनमें जीवन वे+ शस्त्रा से सब चीजों का वर्णन किया हुआ मिलेगा।- (श्री नरेश मेहता : दूसरा सप्तक, पृ.स.-109)

'दूसरा सप्तक में संकलित कवि की 'किरण èोनुएं, 'उषस आदि कविताओं की शब्दावली व प्रतीक वैदिक हैं। इन कविताओं में निहित चिंतन भी कवि की ऋषि-दृषिट व सांस्कारिक राग-बोèा से संपन्न है।-

"अश्व की वल्गा लो अब थाम,

दिख रहा मानसरोवर वू+ल!!

......

स्वर्ग से दिखती है यह झील

हिमालय लगता होगा पाल

तुम्हें वे यज्ञ-पतिनयाँ देख करेंगी गीत सुना अनुवू+ल!!

-(श्री नरेश मेहता : 'दूसरा सप्तक पृ. 119)

श्री नरेश मेहता की कविताओं में प्रÑति चित्राों वे+ माèयम से संस्Ñति की पहचान और संस्Ñति वे+ उदात्त रूप की पुर्नस्थापना हुई है। अपने उदात्त रूप में भारतीय संस्Ñति की सभी अवèाारणाओं का मूल उत्स करुणा है। जिस संस्Ñति में मनुष्य मात्रा वे+ प्रति करुणा तथा चित्त की उदात्तता जैसे मूल्य न हो वह मनुष्य समाज का कल्याण व हित नहीं साèा सकती। कवि की इस वैष्णवता की चरम परिणति युग चेतना वे+ परिष्कार में हुई है। उन्होंने वर्तमान जीवन की अभिव्यकित सांस्Ñतिक मूल्य-संरचनाओं की पुर्नस्थापना वे+ साथ की है। कवि की प्रयोगवादी काव्यचेतना प्राचीन ब्रह्मार्षियों द्वारा खोजी गई औपनिषदिक संरचनाओं से ही नहीं आस-पास वे+ साèाारण जन-जीवन से भी प्रेरणा पाती है। साèाारण जीवन तथा असाèाारण सांस्Ñतिक चितंन परंपराओं वे+ बीच सèो सामंजस्य को श्री नरेश मेहता के काव्य में विभिन्न संरचनात्मक शैलियों में अभिव्यकित मिली है।

प्रत्येक भाषिक या शाबिदक प्रतीक विशेष कथ्य और अभिव्यकित की एक संशिलष्ट मूर्तिमान इकाई है, जिसका अर्थ-संप्रेषण संदभो± और परिसिथतियों की संरचनाओं पर निर्भर करता है।

शाबिदक प्रतीक (सपदहनपेजपबेपहद) वे+ दो निशिचत पक्ष हैं-

1. संवे+तार्थ (ेपहदपपिमक)

2. अभिव्यकित (ेपहदपपिमत)

इन दोनों पक्षों को निम्नलिखित दो स्तरों पर देखा जा सकता है-

1. उपादान

2. रूप

डा. रवीन्द्रनाथ के अनुसार- हमारे जैविक एवं भौतिक संसार में उपलबèा विचार एवं अनुभूतियाँ संवे+तार्थ पक्ष वे+ उपादान हैं। उपादान रूप में वे तरल, संरचनारहित और अवयवसिथत होते हैं। रूप वे+ आèाार पर भाषा इनमें संरचनात्मक व्यवस्था उत्पन्न करती है। व्यवस्था प्राप्त करने वे+ बाद ही तरल विचार एवं अनुभूतियां इकाईब) बनकर बोèागम्य हो पाती हैं। इसी प्रकार अभिव्यकित पक्ष वे+ भी दो स्तर हैं। उपादान रूप में मौखिक भाषा, èवनि सामग्री का उपयोग करती है, जिसका अèययन स्वन-विज्ञान (चीवदवसवहल) कहलाता है।

भाषा संरचना मूलत: रूपपरक है। रूप उसकी इकाइयों वे+ प्रकायो± (निदबजपवदे) पर आèाारित होता है। अत: भाषिक इकाइयों वे+ प्रकायो± पर आèाारित रूप-संरचना का अèययन ही भाषिक अèययन वे+ मूल में सिथत होता है। भाषा वे+ विभिन्न स्तरों पर प्राप्त इकाइयों की व्यवस्था वे+ अèययन को भाषा-वैज्ञानिक अèययन वे+ वें+द्र में रखा जाता है। इस अèययन क्षेत्रा को सूक्ष्म (वें+द्रीय) भाषा विज्ञान (माइक्रो लिंगिवसिटक्स) कहा जाता है। भाषा अèययन वे+ दो अन्य क्षेत्रा भी हैं, जिनका संबंèा रूप से न होकर

x
Please Ask
(कृपया पूछें)

भाषिक प्रतीकों वे+ उपादान से रहता है। इनमें से एक का संबंèा संवे+ताथ वे+ उपादान से है जिसवे+ अèययन क्षेत्रा को इतरविषयी भाषा विज्ञान (मेटालिंगिवसिटक्स) कहा जाता है। इसवे+ विपरीत अभिव्यकित माèयम वे+ उपादान (èवनि या लेखन संवे+त चिन्ह) का अèययन क्षेत्रा पूर्वापेक्षी भाषा विज्ञान (प्रीलिंगिवसिटक्स) कहलाता है। अत: भाषा विज्ञान वे+ निम्नलिखित तीन क्षेत्रा हैं-

1. सूक्ष्म भाषाविज्ञान

2. इतरविषयी भाषाविज्ञान

3. पूर्वापेक्षी भाषाविज्ञान

भाषिक संरचना की प्रÑति

भाषिक रूप का संबंèा, भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था वे+ साथ रहता है। भाषा की संरचना और संरचनात्मक नियमों की प्रÑति पर èयान देते हुए उनवे+ निम्नलिखित लक्षणों की ओर संवे+त दिया जा सकता है-

1. संरचना का संबंèा इकाई रूप वे+ साथ रहता है न कि उसकी अभिव्यकित वे+ माèयम (उपादान) वे+ साथ- भाषा अपनी संरचनात्मक व्यवस्था वे+ रूप में है, इस रूप को भाषा संरचना वे+ संदर्भ में अभिव्यकित दी जाती है। अभिव्यकित पक्ष से तात्पर्य उस माèयम से है जो रूप को व्यक्त करने का साèान बनता है। भाषा व्यवहार वे+ संदर्भ में सामान्यत: यह माèयम या तो उच्चारण का स्वरूप लेता है अथवा लेखन का। इसलिए भाषा वे+ दो अभिव्यकित माèयम देखने में आते हैं-मौखिक और लिखित। भाषा का मौखिक रूप उपादान वे+ रूप में èवनि को अपनाता है इसवे+ विपरीत भाषा का लिखित रूप उपादान वे+ रूप में लिपिचिâनों को स्वीकार करता है। यह दोनों अभिव्यकित माèयम-भाषा का मौखिक पक्ष और उसका लिखित पक्ष अथवा èवनि प्रतीक संयोग और लिपि प्रतीक संयोग, एक ही भाषिक इकाई वे+ दो अभिव्यकित स्वरूप हैं। शब्द या वाक्य जैसी सार्थक भाषिक इकाईयों को चाहे बोलकर èवनि अभिव्यकित माèयम से अभिव्यकित करें अथवा उन्हें लिपि माèयम से अपनी मूल प्रÑति में अर्थात रूप स्तर पर वे शब्द या वाक्य एक ही माने जाएंगे।

2. किसी भाषिक इकाई की संरचना उस इकाई वे+ भीतर सिथत संबंèाों की व्यवस्था है- उदाहरण वे+ लिए अगर हम शब्द स्तर पर 'कमल और 'कलम शब्दों की èवनि व्यवस्था पर èयान दें तो स्पष्ट हो जाता है कि इन दोनों में समान रूप से तीन अक्षर निहित हैं। लेकिन èवनि संयोग वे+ स्तर पर इनवे+ बीच वे+ संबंèाों की व्यवस्था भिन्न होने वे+ कारण ये दोनों दो भिन्न शब्द हैं। इसी प्रकार वाक्य वे+ स्तर पर हम निम्नलिखित उदाहरण देख सकते हैं- (क) लड़का कल जाएगा। (ख) लड़का खाना खाएगा। इन दोनों वाक्यों में तीन-तीन शब्द हैं पर इन शब्दों वे+ आपसी संबंèाों की व्यवस्था वे+ संबंèा में ये दो भिन्न-भिन्न संरचनाओं वे+ उदाहरण हैं।

3. संरचना बोèाात्मक यथार्थ है न कि अभिव्यकितपरक तथ्य- संरचना अपनी प्रÑति में अमूर्त और संकल्पनात्मक होती है। उदाहरण वे+ लिए अगर इकाई वे+ रूप में हम यह वाक्य लें-'लड़का खाना खाएगा तो इसका संरचनात्मक रूप होगा-कर्ता ़ कर्म ़ सकर्मक क्रिया। इस संरचना वे+ बोèाात्मक यथार्थ वे+ संदर्भ में 'लड़का आम खाएगा, कथन अभिव्यकितपरक तथ्य समझा जाएगा क्योंकि ऐसे अन्य कई वाक्य संभव हैं, जैसे-'लड़का खाना खाएगा, 'लड़की लेख लिखेगी, 'लड़का लकड़ी काटेगा, 'लड़की खाना बनाएगी आदि। संरचना वे+ बोèाात्मक यथार्थ वे+ èाारातल पर ये सभी वाक्य समान हैं जबकि अभिव्यकितपरक तथ्य वे+ आèाार पर ये वाक्य भिन्न-भिन्न माने हैं।

4. संरचना इकाई का आèाार उसवे+ अवयवों वे+ बीच पाए जाने वाले संबंèा का प्रकार्य होता है- पर ये संबंèा भाषिक इकाईयों वे+ प्रकार्य पर आèाारित होते हैं।

5. संरचना संबंèाी नियम संख्या में सीमित और प्रÑति में सर्जनात्मक होते हैं- यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि भाषा अपने प्रयोगगत संदर्भ में अगाèा होती है। उसवे+ वाक्य संरचनात्मक होते हैं। हम रोज नए-नए वाक्यों का प्रयोग करते हैं। यह संभव नहीं कि जितने वाक्य हम बोलें, उतने ही नियमों को भी याद रखें। वस्तुत: संरचनात्मक नियम अपनी संख्या में सीमित होते हैं पर उनकी प्रÑति सर्जनात्मक होती है। इन सीमित पर सर्जनात्मक नियमों वे+ आèाार पर ही हम संख्यातीत वाक्यों को व्यवहार में लाने में समर्थ हो पाते हैं।

x
Please Ask
( कृपया पूछें )

वस्तुतः संरचनावाद निèाŸाारित संरचनाओं की अवèाारणा पर आèाारित है। वह व्यक्ति की स्वतंत्रा सृजन-क्षमता की अपेक्षा तार्वि+क संरचनात्मक अनुशासनब)ता से अèािक बंèाा है। सन 1980 वे+ आसपास साहित्य, विशेषत: काव्य वे+ क्षेत्रा में अ-संरचनावाद (कमबवदेजतनबजपवद) और भाषा की अनेकार्थता व संदिग्èाार्थता (ंउइपहनपजल) की व्यंजक क्षमता पर बल देने की प्रवृतित उभरी, जिसे उत्तर-संरचनावाद या असंरचनावाद कहा गया। यह संरचनावाद वे+ बंèाो-बंèााए, निèाŸाारित व तार्वि+क संरचनात्मक स्वरूप से भिन्न अथवा उसवे+ विरोèा में था। इसवे+ अनुसार हर साहितियक रचना अनेक-स्तरीय अथो± को व्यंजित करती है जो विचार वे+ बने बनाए घेरों और संरचनाओं को लांघने से उत्पन्न होते हैं। उत्तर-संरचनावाद व्यवस्थापरक संरचनाओं की बजाए अनुभव और अभिव्यकित की स्वतंत्राता और स्वायत्तता पर बल देता है। साथ ही उसे पढ़ने वाले अलग-अलग पाठक भी पाठ वे+ अपने-अपने वैयकितक अर्थ, उददेश्य आदि को नए असितत्व में सृजित करते हैं। उत्तर-संरचनावाद ने 'प्रोकित वे+ रूप में भी भाषा-प्रयोग पर èयान दिया। इसवे+ अनुसार किसी रचना वे+ पाठ में अभिव्यकित (योपहदपिमत) अèािक महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि रचनाकार एक व्यकित वे+ रूप में अभिव्यकित वे+ द्वारा संवे+तार्थ (जिसे सस्यूर नेपहदपिमक कहा और जिसे संरचनावाद ने भी महत्त्व दिया) को निर्मित करता है। इस प्रकार यह संरचनावाद से भिन्न अवधारणा हैं।

**संदर्भ ग्रंथ-**


1. काव्यांग-प्रक्रिया -डा. शंकरदेव अवतरे

2. हिंदी आलोचना: पहचान और परख -सं. इंद्रनाथ मदान

3. 'समिधा (काव्य संकलन)-भाग-1 और भाग-2 - श्री नेरश मेहता


**संभावित प्रश्न**

1. 'साहितियक Ñति के अर्थपूर्ण-पाठ के लिए-लेखक, पाठक और Ñति की सांस्Ñतिक-संरचना का समान होना महत्वपूर्ण हैं -इस कथन की विवेचना कीजिए।

2. 'संरचनावाद को स्पष्ट करते हुए-संरचनावाद और उत्तर-संरचनावाद की तुलना कीजिए।


x

Please Ask

( कृपया पूछें )